Nbhdsa [VerfasserIn]: Bhaktamla
[Lakhana], [circa 1900] Seite 194

कथा रुक्माङ्गद की।

राजा रुक्माङ्गद की कथा एकादशीमाहात्म्य व पुराणों में प्रसिद्ध है उनकी एक फुलवारी ऐसी सुगन्धित व शोभायमान थी कि देवताओं की स्त्रियाँ वहाँ का सुख लेने के उतरती थीं एकदिन उनमें से किसीके बेर का कांटा लगगया उसकी अशुद्धतासे उड़ न सकी माली की लड़की से कहा कि कोई एकादशी व्रत जो किया हो तौ उसका पुण्य मुझको दिला देव कि स्वर्ग जाऊँ यह बात सुनकर राजा आया देवांगना से कहा यहाँ व्रत कोई जानता नहीं उसने बतलाया तब राजाने एक साहूकार की लौंड़ी जो मारने से भूं खी प्यासी सारा दिन व रात जागती रही बुलवाकर पुण्य दिलादिया कि देवाङ्गना स्वर्ग गई व राजाने सारे देश व नगर में डौंड़ी एकादशी की फेरवायदी हाथी घोड़ेतक उपास करते थे अन्त में सब समेत राजा वैकुण्ठ गया राजा की लड़की भी एकादशी व्रत की निष्ठायुक्त ऐसी थी कि एकादशी के दिन उसका पति आया देखादेखी व्रत रहा पीछे भ ंख से विकल होकर भोजन काहा उसने माहात्म्य से प्रवीण थी न दिया दो चार घड़ी पीछे वह मरगया भगवद्धाम को गया उसकी स्त्री ने बड़ा उत्साह माना स्तुति करते करते वह भी भगवद्धाम को चलीगई ऐसी ऐसी कथा एकादशीमाहात्म्य में बहुत हैं भिसकी इच्छा हो सो देखले।

बारहवीं निष्ठा।

महिमा महाप्रसाद जिस चार भक्तों की कथा है।

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलों के जम्बूफल रेखा को दण्डवत् करके हयग्रीव अवतार को दण्डवत् करताहूँ कि कामरूदेश में देवताओं की सहायता व दुष्टों के नाश के हेतु अवतार धारण किया। गीताजी में भगवत् की आज्ञा है कि जो कुछ करे, जो भोजन करे, जो यज्ञ करे, जो देवे, जो तप करे सब मेरे अर्पण करके शुभ अशुभ कर्मों के बन्धन से छूट जावेगा इस हेतु उचित है कि जो कुछ खाना, पीना व सामां नवीन तैयार हो सो सब पहले भगवत् अर्पण करे तब अपने अर्थ लगावे कि भगवत् वह अर्पण किया हुआ भक्त का अङ्गीकार करते हैं सो गीताजी में भगवत् ने कहा है कि पत्र, पुष्प, फल, जल जो वस्तु भक्ति से हमको निवेदन करते हैं प्रसन्न होकर खाताहूँ भगवत्प्रसाद के भोजन से व शास्त्रोक्त कर्मों के करने से कितना गुण भारी है कि बहुत शीघ्र अन्तःकरण निर्मल होकर भगवच्चरणों में प्रीति होजाती है और पुराणों में लिखा है कि हजार एकादशी

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/nabhadasa1900/0203
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG